कविता/आसिफ़ा के लिए न्याय

इराक़ में चल रही लड़ाई के तीन साल पूरे होने पर हेडन करूथ के नाम एक ख़त

लगभग चालीस साल हुए
उन सब जंगों के ख़िलाफ कविता लिखने के बारे में
तुमने कविता लिखी थी, हारलन काउंटी से लेकर इटली
और स्पेन. जब तुम्हारी चुनी हुई कविताएँ
आज मिलीं, उनमें से एक यह कविता थी जिसे
फिर पढ़ते हुए मैं ठिठका.

हम तबसे लगातार युद्धरत हैं.
मैं महायुद्ध के दौरान पैदा हुआ
और मैंने भी अपने सारे दुखदायी दिनों में
उस ख़ास अहमकपन
और बेमतलब और लाचार दर्द को जिया
और उसके खिलाफ लिखा है.
क्या उससे एक जान भी बच पाई?
कौन बता सकता है?
बजाय इसके कि ऐसा करने से
मेरी अपनी जान बची.

आह, मैं बता पाता तुम्हें बची हुई जानों
के बारे में. सित्का में थी
वह एक जवान खूबसूरत औरत
जिसके पति ने, जो उसकी कविता से ईर्ष्या
करता था, उसके दोनों पैर
एक रस्सी से बाँध दिए और
फेंक दिया अपनी नाव से.
दक्षिण-पूर्वी अलास्का के उन पानियों में
आपके पास जिन्दगी के लगभग 12 मिनट होते हैं.

या ऊटा की दादी अम्मा
जो छंदबद्ध, रूमानी सॉनेट लिखा करती
और एक दिन रात गए
मुझे मोटेल में फ़ोन किया क्योंकि
उसका जबड़ा टूटा हुआ था, और उसकी नाक,
और वह अब भी पी रहा था. या मैं तुम्हें
एलेक्स के बारे में बता सकता हूँ, जो ड्रग्स
से जुड़े जुर्म में उम्रक़ैद काट रहा था
और क्लासिक्स से रूबरू होने पर उसकी आँखें
कैसे चमक उठीं.

हाँ, कविता जिन्दगियाँ बचाती है.
सारी जंगें घर से ही शुरू होती हैं
युद्धरत आत्म के भीतर.
ना, हमारी कविताएँ नहीं रोक सकतीं
जंग, ना यह जंग और ना कोई और
बल्कि वह जो
अपने अंदर धधकती है.
जो पहला और एकमात्र कदम है.
यह एक
पाक यकीन है, एक कर्तव्य
कवि का शगल.
हम लिखते हैं कविता जो हमें लिखनी चाहिए.

कविता / शैलेंद्र श्रीवास्तव

ऐ विषधर
इतना विष
कहाँ से पाया है
जो मद मे चूर
बीन पर झूमते

कभी मुसलमानों,
कभी दलितों,
कभी वामपंथियों को
फुफकारते रहते हो ।

और बलातकरियों को,
गंदी बात बोलने वाले सहचरों को,
कमल थमाते रहते हो

ऐ विषधर
इतना तो बता दो
कहाँ छिपे रहे तुम सब
सत्तर साल तक ।

1 मई, मज़दूर दिवस पर विशेष

अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर दिवस की क्रांतिकारी विरासत

1 मई पूरी दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर दिवस के रूप में मनाया जाता है। 1884 में अमेरिका में 8 घंटे काम की मांग का शुरु हुआ यह संघर्ष पूरी दुनिया में पूंजीवाद के खिलाफ़ मज़दूर वर्ग के संघर्ष का प्रतीक बन गया। 1886 में ''आठ घंटे काम, आठ घंटे आराम और आठ घंटे मनोरंजन' का नारा हर जगह हवा में तैरने लगा। अमेरिका की पूंजीपतियों की सरकार ने इस आंदोलन को कुचलने के लिये खूनी षड्यंत्र में डुबोकर खत्म करना चाहा। 1 मई को मज़दूरों की रैली पर गोली चलाकर 6 मज़दूरों को गोली से भून दिया।

इसके विरोध में 3 मई को अमेरिका के शिकागो शहर के 'हे मार्किट' में मज़दूरों की सभा पूंजीपतियों द्वारा बम फिंकवा कर इसका दोष मई दिवस आंदोलन के नेताओं पर लगाकर मज़दूरों के चार नेताओं स्पाइश, फिशर, ऐंजेल्स व हचिंगसन को फांसी पर चढ़ दिया। लेकिन यह आंदोलन आगे बढ़ता गया और कई देशों में फ़ैल गया। मजबूरन पूंजीवादी सरकारों को झुककर मज़दूरों के आठ घंटे कार्य दिवस के अधिकार को स्वीकार करना पड़ा।

मज़दूरों का पूंजीवादी शोषण व उत्पीड़न के खिलाफ़ संघर्ष यहीं नहीं रुका। पूरी दुनिया के पैमाने पर मज़दूरों के संघर्ष आगे बढ़े, ट्रेड यूनियन बनाने और संघर्ष करने से आगे बढ़कर मज़दूरों ने एक वर्ग के रूप में खुद को एकजुट कर कई शानदार संघर्ष किये व कई अधिकार हासिल किये। मज़दूर वर्ग ने पूंजीवादी गुलामी से मुक्ति पाने के लिये मार्क्सवाद को अपनी विचारधारा के रूप में ग्रहण कर कई देशों में क्रांतियां कीं और मज़दूर राज कायम किये। 1917 में रूस में अक्टूबर क्रांति ने मानवता के इतिहास में नये युग की शुरुआत की। जहां शोषण, उत्पीड़न पर आधारित पूंजीपतियों के राज को जड़मूल से उखाड़कर मज़दूरों का राज कायम किया गया। 1920 व 1930 के दशक में एक तरफ़ जहां मज़दूर राज के अंतर्गत सोवियत संघ में विकास व सभ्यता के नये-नये कीर्तिमान स्थापित हो रहे थे वहीं पूंजीवादी दुनियां संकट दर संकट से घिरती जा रही थी और मंदी में गोते खा रही थी।

इसी दौरान अपने संकटों में घिरी पूंजीवादी दुनिया ने हिटलर जैसा फासीवादी भस्मासुर पैदा किया जो पूरी दुनिया को गुलाम बनाने के लिये आगे बढ़ा यह मज़दूरों का राज सोवियत संघ ही था जिसने हिटलर के गुमान को तोड़ते हुए फ़ासीवाद को पराजित कर मानवता की रक्षा की। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद एक तिहाई दुनिया मज़दूरों के लाल झंडे के नीचे आ गयी थी। मज़दूरों के क्रंतिकारी संघर्षों एवं समाजवाद की बढ़ती लहरों से घबराकर पूंजीवादी देशों ने अपने यहां कल्याणकारी राज का चोला पहनकर मज़दूरों को बहुत से अधिकार व सुविधायें देने को मजबूर होना पड़ा।

लेकिन पूंजीपतियों के भीतरघात के फलस्वरूप 1956 में पहले सोवियत संघ में तथा 1976 में चीन में मज़दूर राज के खात्मे से समाजवाद के बढ़ते अभियान व मज़दूरों के क्रांतिकारी संघर्ष को भारी धक्का लगा। एक बार फ़िर पूरी दुनिया के पैमाने पर पूंजीवाद हावी हुआ और समाजवाद और मज़दूर राज के दबाव में उसने जो सुविधायें मज़दूर वर्ग को दी थीं उन्हे एक-एक कर छीनना शुरु कर दिया। पूरी दुनिया के पैमाने पर साम्राज्यवाद पूंजीवाद के इस हमले को निजीकरण-उदारीकरण-वैश्वीकरण के नाम से जाना गया। पूरी दुनिया के स्तर पर पूंजीवादी सरकारों ने मज़दूरों पर हमला बोलते हुए उनको अधिकारविहीन करते हुए शोषण-उत्पीड़न को नये चरम पर पहुंचा दिया। तथाकथित 'कल्याणकारी राज्य' के तहत मज़दूरों को जो सुविधायें मिली थी उन्हें क्रमशः छीना जा रहा है। हर जगह छंटनी, सुविधाओं व भक्तों में कटौती तथा ठेकेदारी की प्रथा का बोलवाला है।

इस बीच 2007 से 08 से जारी आर्थिक संकट के बाद बड़े पैमाने पर पूंजीवादी सरकारों ने जहां सट्टेबाजों व पूंजीपतियों को बचाने के लिये बेलआउट पैकेज दिये वहीं मज़दूरों की सुविधाओं में भारी कटौती की है। इसके खिलाफ़ मज़दूर वर्ग ने तीखा विरोध किया है लेकिन क्रांतिकारी ट्रेड यूनियनों व मज़दूर वर्ग की क्रांतिकारी पार्टियों के अभाव में से संघर्ष केवल रक्षात्मक लड़ाइयों तक सीमित हो जा रहे हैं।

भारत में भी उदारीकरण-वैश्वीकरण की नीतियों के तहत शासक वर्ग ने पिछले लगभग 30 वर्षों से मज़दूर वर्ग पर हमला बोला हुआ है। मोदी राज में यह हमले अपने चरम पर पहुंच गये हैं। मोदी सरकार जहां मज़दूर वर्ग की कई पीढ़ियों के संघर्षों से हासिल श्रम अधिकारों को पूर्णतः निष्प्रभावी बनाने की कोशिश कर रही है। अप्रेंटिस एक्ट व बाल श्रम कानूनों में वह पहले से संशोधन कर चुकी है। अप्रेंटिस के नाम पर न्यूनतम से भी कम मज़दूरी पर पूंजीपतियों को कुशल मज़दूर उपलब्ध कराने व बाल श्रम का दायरा बढ़ा कर वे पूंजीपतियों पर पहले ही उपकार कर चुके हैं। श्रम कानूनों व 100 के लगभग राज्य सरकारों के श्रम कानूनों को केवल चार लेबर कोड या श्रम नियमावली में समेट कर मोदी सरकार मज़दूरों को कानूनी रूप से पूरी तरह निशक्त बनाने पर तुली है। महिलाओं से गारमेन्ट सैक्टर में रात की पाली में काम कराने की छूट, यूनियन बनाने के अधिकार को और संकुचित करने, हड़ताल करने को बेहद कठिन बनाने और श्रम विभाग व श्रम न्यायालय को भी पूरी तरह निष्प्रभावी कराने की कोशिश मोदी नीत भाजपा सरकार द्वारा की जा रही है।

साथियो, ऐसे में हमें मज़दूर वर्ग के क्रांतिकारी शिक्षक कार्लमार्क्स की शिक्षाओं को याद करना होगा। यह वर्ष कार्ल मार्क्स की 200 वीं वर्षगांठ वर्ष भी है। मार्क्स ने कहा था कि मज़दूर वर्ग मुक्ति स्वयं मज़दूर वर्ग का काम है। जब तक वेतन गुलामी पर आधारित यह पूंजीवादी व्यवस्था यानी मालिक-मज़दूर की व्यवस्था खत्म कर मज़दूर वर्ग अपना राज कायम नहीं करता तब तक मज़दूर वर्ग की मुक्ति संभव नहीं है। कार्ल मार्क्स के वैज्ञानिक समाजवाद का सिद्धांत देते हुये बताया था कि मानवता का भविष्य मज़दूर वर्ग के हाथ में है। सभी शोषित-उत्पीड़ित वर्गों को मुक्त करते हुए सर्वहारा वर्ग खुद को पूंजी की गुलामी से मुक्त कर लेगा तथा मज़दूर वर्ग की अगुआई में एक शोषणविहीन, वर्ग विहीन दुनिया ही मानवता का भविष्य है।

दैनिक जागरण की प्रो-रेपिस्ट पत्रकारिता के विरोध में साहित्यकारों ने किया 'बिहारसंवादी' व 'मुक्तांगन' का बहिष्कार

सुशील मानव

वरिष्ठ साहित्यकार अरुण कमल, आलोक धन्वा, अरुण शीतांष कर्मेंदु शिशिर, ध्रुव गुप्त, तारानंद वियोगी, प्रेम कुमार मणि, संजय कुमार कुंदन, कवि निवेदिता शकील, सुजाता चौधरी व युवा कवि राकेश रंजन ने दैनिक जागरण की प्रो-रेपिस्ट पत्रकारिता के विरोध में उसके इस कुकृत्य की कड़े शब्दों में भर्त्सना करते हुए आज से शुरू हुए "बिहार संवादी" कार्यक्रम का बहिष्कार किया है।

गौरतलब है कि दैनिक जागरण ने प्रो-रेपिस्ट पत्रकारिता का बेहद ही अश्लील नमूना पेश करते हुए अपनी कल के यानी 20 अप्रैल 2018 को चंड़ीगढ़, पटना, दिल्ली, लखनऊ, जम्मू संस्करणों में छापे गए आधारहीन मिथ्या खबर को आज 21 अप्रैल 2018 को फिर से इलाहाबाद, कानपुर वाराणसी समेत कई संस्करणों में उसी बर्बरता और निर्लज्जता के साथ उसी निर्णयात्मक शैली में सेम हेडिंग के साथ दोहराया है।

जम्मू के कठुआ जिले के रसाना गाँव में बकरेवाल समुदाय की आठ वर्षीय बच्ची आसिफा के साथ हुए सामूहिक बलात्कार के मामले में हिंदी अखबार दैनिक जागरण ने 20 और 21 अप्रैल 2018 को कई अंकों में "बच्ची से नहीं हुआ था दुष्कर्म" हेडलाइन वाली निष्कर्षात्मक खबर छापी है। जबकि दिल्ली की फोरेंसिक लैब एफएसएल ने अपनी रिपोर्ट में बच्ची संग मंदिर में बलात्कार की पुष्टि की है।

रिपोर्ट में स्पष्ट कहा गया है कि मंदिर के अंदर जो खून के धब्बे मिले थे, वो पीड़िता के ही हैं। इसके अलावा मंदिर में जो बालों का गुच्छा मिला था जाँच में वो एक आरोपी शुभम संगारा के होने की पुष्टि लैब ने किया है। इसके अलावा पीड़िता के कपड़ों पर मिले खून के धब्बे उसके डीएनए प्रोफाइल से मैच करते हैं। साथ ही पीड़िता की वजाइना पर खून मिलने की पुष्टि लैब ने की है।

इतने सारे वैज्ञानिक सबूतों, प्रमाणों, तथ्यों को झुठलाते हुए दैनिक जागरण ने उस मिथ्या बात को हाइलाइट करके फ्रंट पेज पर छापा, जो लगातार भाजपा और संघ के लोग दुष्प्रचारित करते चले आ रहे हैं। साफ जाहिर

है दैनिक जागरण अखबार पत्रकारिता के बुनियादी बातों, उसूलों और मूल्यों को त्यागकर सत्ता के मुखपत्र की तरह कार्य करते हुए बलात्कार के पक्ष में मानस बनाने का कार्य कर रहा है, जो न सिर्फ अनैतिक अमानवीय व हिंसक है बल्कि आपराधिक भी।

वहीं दूसरी ओर दिल्ली में दैनिक जागरण के प्रो-रेपिस्ट पत्रकारिता से नाराज़ होकर प्रतिरोध स्वरूप उसके द्वारा दिल्ली में हर माह आयोजित किये जाने वाले दो सत्रों के साहित्यिक कार्यक्रम मुक्तांगन का भी साहित्यकारों फिल्मकारों ने बहिष्कार कर दिया है। मुक्तांगन का बहिष्कार करने वालों में वरिष्ठ कवि सविता सिंह, विपिन चौधरी, कवि सुजाता, दिल्ली जलेस के सचिव प्रेम तिवारी और मिहिर पांड्या शामिल हैं।

इसके अलावा सम्मानित कवि मदन कश्यप और संतोष चतुर्वेदी ने भी साहित्यकारों से जागरण संवादी व मुक्तांगन के बहिष्कार की अपील की है।

लेखक संगठनों में से जन संस्कृति मंच ने कल 20 अप्रैल को ही साहित्यकारों से जागरण संवादी के बहिष्कार की अपील की थी। आज इलाहाबाद जलेस के सचिव संतोष चतुर्वेदी ने जलेस इलाहाबाद अनदह, व पहली बार साहित्यिक पत्रिका की ओर से साहित्यकारों से अपील की है कि वो जागरण संवादी का हिस्सा न बनें।

दिल्ली जलेस की ओर से सचिव दिल्ली जलेस के सचिव व साहित्यकार प्रेम तिवारी ने दैनिक जागरण के बलात्कारी पत्रकारिता की घोर भर्त्सना करते हुए कहा,-"मैंने मुक्तांगन के कार्यक्रम में जाना स्थगित कर दिया है । मेरे विरोध का पहला कारण यह है कि दैनिक जागरण ने पिछले दिनों कठुआ रेप केस को लेकर जैसी रिपोर्टिंग की है उससे पत्रिकारिता की न सिर्फ साख गिरी है, लोगों का भरोसा टूट है बल्कि इससे मानवीय संवेदना को गहरा धक्का भी लगा है। दूसरा, दैनिक जागरण की पत्रकारिता जनतांत्रिक और सेक्युलर मूल्यों और मर्यादाओं की हत्या करने वाली साबित हुई है।" चूँकि साहित्यकार ही जन और समाज को सबसे अधिक नजदीक से देखने सोचने और अनुभूति करनेवाला जीव होता है और उसकी सबसे पहली प्रतिबद्धता इन्हीं जन व समाज के प्रति होती है। अतः एक ऐसा अखबार जो जनविरोधी फासिस्ट ताकतों के हाथों बिककर उनका मुखपत्र बन चुका है और जो लगातार मिथ्या, आधारहीन तर्कहीन खबरों व उनके प्रोपेगेंडा को चलाकर जनचेतना, व सामूहिक विवेक को नष्ट करके लोगों को हत्यारी—बलात्कारी भीड़ में तब्दील करने के उपक्रम में लगा हुआ है।

दैनिक जागरण द्वारा आयोजित किये जा रहे तथाकथित साहित्य उत्सव बिहार संवादी व मुक्तांगन में खुद को जनपक्षधर कहने वाला साहित्यकार शामिल ही क्यों हो? क्यों न सभी साहित्यकार विशेषकर जो दैनिक जागरण संवादी में बतौर वक्ता बुलाये गये हैं वो इस कार्यक्रम का बहिष्कार करें?